

विक्रम संपत-२०३६, श्रावण सु६-१४, सोमवार, ता. २५-८-१९८०
 वचनामृत-३०६, ३१०, ३२१. प्रपचन नं. १८

रुचिका पोषण और तत्त्वका मंथन चैतन्यके साथ अेकाकार हो जाय तो कार्य होता ही है. अनादिके अभ्याससे विभावमें ही प्रेम लगा है उसे छोड. जिसे आत्मा रुचता है उसे दूसरा नहीं रुचता और उससे आत्मा गुप्त-अप्राप्य नहीं रहता. जागता जुव विद्यमान है वह कहां जायेगा? अवश्य प्राप्त होगा ही. 30६.

वचनामृत. ३०६. आज ँसमें चिठी पडी थी. 'रुचिका पोषण और तत्त्वका मंथन चैतन्यके साथ अेकाकार हो जाय तो कार्य होता ही है.' क्या कहते हैं? भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्यधन, उसकी जिसको रुचि है, रुचि अनुयायी वीर्य, उसकी रुचि है तो उस ओर वीर्य जुके बिना रहता नहीं. जिसकी जरूरत अंदर लगे, उस ओर दृष्टिका विषय लुअे बिना रहे नहीं. अनादि कावसे ऐसा है. उसमें भी अभी वर्तमानमें तो काव मला दुर्बल हो गया है. सत्य बात बाहर आने पर भी मुश्किल हो गयी. आलाहा..!

यहां तो रुचिका पोषण. अपना आत्म स्वरूप ज्ञान, आनंद, शांति, स्वच्छता, प्रभुता ऐसी शक्तिसे भरा पडा (है). उसकी रुचि, उसका पोषण यदि हो, उसकी रुचिका पोषण. बारंबार रुचिका उस ओर जुकाव हो. और 'मंथन चैतन्यके साथ अेकाकार हो...' वैसे तो मंथनमें तो विकल्प है, प्रभु! परंतु उस विकल्पको छोडकर अंतरमें जानेका प्रयत्न कर. मंथनमेंसे अंतरमें जा. मंथन है तो विकल्प, राग. 'मंथन चैतन्यके साथ अेकाकार हो जाय तो कार्य होता ही है.'

'अनादिके अभ्याससे विभावमें ही प्रेम लगा है...' आलाहा..! प्रभु अेक ओर पडा रहा और बाह्य पदार्थमें प्रेम (लग गया). छोटी-बडी, सूक्ष्म, स्थूल अनेक प्रकारके बाह्य प्रकारमें रुचि लग गयी है. उस ओरका जुकाव हो गया है. अंतर्भुज जुकाव नहीं किया. 'अनादिके अभ्याससे विभावमें ही प्रेम लगा है...' विभाव अर्थात् सूक्ष्म राग अंदर होता है, चैतन्यके विचारमें भी जो राग होता है, शुद्ध भगवान आत्मा उसके विचारका भी राग हो, उस रागको भी छोडकर अंतरमें रुचि जाये.

कलश टीकामें लिखा है, कलश टीका है. उसमें लिखा है कि आत्माका विचार, मंथन सब विकल्प है. राजमलञ्जकी कलश टीका है. आलाहा..! वह तो ज्ञायक चैतन्यमूर्ति जिसको कोई अपेक्षा ही नहीं, ऐसी निरपेक्ष यीज अंतरमें दृष्टि करनेसे... मलान पुरुषार्थ, मलान पुरुषार्थ. अंतरमें मलान वीर्य अंतरमें जुकनेसे आत्माकी प्राप्ति होती ही है. आलाहा..!

‘जिसे आत्मा रचता है उसे दूसरा नहीं रचता...’ जिसको आत्मा रचता है उसको दूसरी कोई यीज रचती नहीं. आये, विकल्प आये. आलाहा..! लेकिन उसे रचे नहीं. ‘और उससे आत्मा गुप्त-अप्राप्य नहीं रहता.’ जिसे अपना आनंद स्वप्न, उसके प्रमाणमें रुचिका वीर्य अंतरमें जुकाया है तो उसे प्राप्त हुआ बिना नहीं रहता. प्रभु प्राप्त हुआ बिना रहे नहीं. आलाहा..! जितने प्रमाणमें अंदर पहुंयनेका वीर्य चालिये उतना वीर्य करे और प्राप्त न हो, ऐसा नहीं बनता. आलाहा..! अंदरसे भेदज्ञान हो जायेगा. राग और भगवान दोनों भिन्न पड जाते हैं. दोनों भिन्न-भिन्न यीज है. चाले तो व्यवहारमें ... शुभरागका अनेक प्रकारका सदाचरण करनेमें आता है. ... सदाचरण है नहीं. शुभराग सदाचरण नहीं है. सदाचरण तो सत् निर्विकल्प चैतन्यप्रभु ऐसा सत्, उसमें आचरण करना वह सदाचरण है. दुनियासे अलग यीज है, लैया! आलाहा..! दुनिया सदाचरण (उसे कहती है), बाहरसे ब्रह्मचर्य पावे, स्त्रीसे विवाह न करे, पैसाकी ममता घटाकर पैसेकी मर्यादा रभे. वह कोई यीज नहीं. आलाहा..!

अंतर भगवान पूर्णानंदका नाथ विराजता है, उसकी जितनी रुचि, वीर्य चालिये, उतना वीर्य चले और प्राप्त न हो, ऐसा नहीं बनता. ‘आत्मा गुप्त-अप्राप्य नहीं रहता.’ आलाहा..! जितने प्रमाणमें आत्मा प्रति रुचि और दृष्टि चालिये, उतनी दृष्टि और रुचि हो तो आत्मा अप्राप्य रहता नहीं. आलाहा..! आत्मा अप्राप्य रहता है तो समझना कि उसमें जितना वीर्य चालिये उतना पुरुषार्थ नहीं है. पुरुषार्थ कहीं दूसरेमें रुक गया है. आलाहा..! मात्र बातें हैं, करना क्या?

‘जागता जव विद्यमान है...’ जागता जव चैतन्य स्वप्नसे जागता जव विद्यमान है, त्रिकाल विद्यमान है. आलाहा..! ‘वह कहां जायगा?’ जागता जव... आलाहा..! विद्यमान है वह कहां जायगा? आलाहा..! थोड़े शब्दमें बहुत अंदर भर दिया है. जो वीर्य अंदरमें जानेका चालिये उतना नहीं हो तो समझना कि कहीं बाहरमें उपयोग है. आलाहा..! कोई बाह्यमें, चाले किसी भी प्रकारसे लेकिन बाह्यमें ही उपयोग हो. अंतरमें जानेका उपयोग उतना हो तो प्राप्त हुआ बिना रहे नहीं. आलाहा..!

‘अवश्य प्राप्त होगा ही.’ ‘कहां जायगा?’ जागती ज्योत अनादिअनंत विराजती है, आलाला..! प्रभु जायगा कहां? तेरी रुचि और वीर्यके अभावके कारण उस ओर तेरा जुकना नहीं हुआ. आलाला..! कहीं-कहीं जागती प्रपंच जल अनेक प्रकारकी, सदाचारके नाम पर भी शुभरागका पोषण करता है, वह जल है. आलाला..! सदाचारण करते हैं. सदाचारणमें तो प्रभु सत् पडा है न. सत्का आचरण तो त्रिकावी सत् है उसका आचरण चाहिये. सदाचारण तो उसको करते हैं. बाकी त्रिकाव सत् है, उससे विरुद्ध भाव है वह असत् आचरण है. चाहे तो दया, दान, व्रत आदिकी क्रियाके परिणाम हो. आलाला..! है बिलकुल, कडक भाषामें कहें तो अधर्म है. आलाला..! दुनिया जिसे सदाचारण मानती है वह असदाचारण है. सदाचारण अंदर रहता है, प्रभु! सच्चिदानंद प्रभु सदा जागती ज्योत चैतन्यबिंब ज्ञानके प्रकाशका पिंड, सूर्य चैतन्यसूर्य जागती ज्योत अनादि अनंत विद्यमान है, उस ओरकी जितने प्रमाणोंमें रुचि और वीर्य चाहिये, उतना वीर्य रुचि हो और प्राप्त न हो, ऐसा नहीं बनता. आलाला..! यह मूलकी बात है, प्रभु! इसके बिना सब बिना अंके शून्य हैं.

अंतर भेदज्ञान... आलाला..! सूक्ष्म विकल्पसे भी भेदज्ञान, उसके बिना आत्माका पता मिले नहीं और दूसरी कोई क्रियाकांडसे जन्म-मरणका अंत आता नहीं. आलाला..! ‘अवश्य प्राप्त होगा ही.’ 306. आज किसीने रखा था. अपने यहां 390.

चैतन्यलोक अद्भुत है. उसमें ऋद्धिकी न्यूनता नहीं है. रमणीयतासे भरे हुए इस चैतन्यलोकमेंसे बाहर आना नहीं सुहाता. ज्ञानकी ऐसी शक्ति है कि जब एक ही समयमें इस निज ऋद्धिको तथा अन्य सबको जान ले. वह अपने क्षेत्रमें निवास करता हुआ जानता है; श्रम पडे बिना, भेद हुये बिना जानता है. अंतरमें रहकर सब जान लेता है, बाहर आंकने नहीं जाना पडता. 390.

390. ‘चैतन्यलोक अद्भुत है.’ प्रभु! तेरा चैतन्यलोक अंदर अद्भुत है. उसकी अद्भुतताके आगे ईन्द्रका ईन्द्रासन सडे हुये तिनके जैसा है. ऐसा अंदरमें मला वैभव पडा है. ‘चैतन्यलोक अद्भुत है. उसमें ऋद्धिकी न्यूनता नहीं है.’ कोई भी अंतर शक्ति अनंत है, अनंत-अनंत शक्ति संख्यासे. संख्यासे अनंत-अनंत गुण हैं. कोई गुणमें क्षति नहीं है, न्यूनता नहीं है. आलाला..! ऋद्धिकी न्यूनता बिलकुल नहीं है. आलाला..! ‘रमणीयतासे भरे हुये...’ भगवान तो रमणीयतासे भरा है. अंदर रमना, आनंदमें रमना ऐसा भरा है. रमणीयता बाह्यमें कहीं नहीं

है. ईन्द्रके ईन्द्रासनमें भी ऊपर है. आलाला..! विषयकी वासना ईन्द्राणी ईन्द्रको... समझिती हो, अभी ईन्द्र समझिती है. फिर भी जितना पर-ओर राग आता है, उतना राग दुःख और ऊपर है. यहां तो पहलेसे लेना है, यहां तो आत्माके प्रमाणमें पुरुषार्थ चालिये. जितने प्रमाणमें पुरुषार्थ चालिये उतने प्रमाणमें पुरुषार्थ हो तो आत्मा प्राप्त होता है. आलाला..!

‘रमणीयतासे भरे हुए ईस चैतन्यलोकमेंसे बाहर आना नहीं सुलता.’ जिसको भेदज्ञान हुआ, सम्यग्दर्शन हुआ, आत्माकी संपदा सम्यग्दर्शनमें प्राप्त हुयी. आलाला..! जिसको ‘रमणीयतासे भरे हुए ईस चैतन्यलोकमेंसे बाहर आना नहीं सुलता.’ अंदर रह सकते नहीं, विकल्पमें बाहर आना ही पड़े. लेकिन वह दुःख है. आलाला..! चाहे तो शुभराग हो. प्रभुका वचन तो ऐसा है, त्रिलोकनाथ वीतरागका वचन, पुरुषार्थसिद्धि उपाय शास्त्र है, अमृतचंद्राचार्यने बनाया है, समयसारकी टीका की उन्होंने पुरुषार्थसिद्धि उपाय बनाया है. यहां तो ऐसा कहते हैं, प्रभु! परकी दया तो पाल सकता नहीं, एक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता नहीं तो तू कैसे परकी दया पाल सकते हो? आलाला..! वह तो ठीक, पर दया पालनेका भाव आया, वह कर सकता तो नहीं, भाव आया वह आत्माकी हिंसा है. अरेरे..! गजब बात! पुरुषार्थसिद्धि उपाय, अमृतचंद्राचार्य. श्लोक मूल पाठ (है).

परकी दया वह हिंसा है. अरेरे..र..! क्योंकि यहां विकल्प-राग उठता है. आलाला..! एक द्रव्य दूसरे द्रव्यका कुछ कर सकता तो नहीं. छूता नहीं, स्पर्शता नहीं, प्रवेशता नहीं. वह बात तो दूर रही. परंतु उस द्रव्यकी दयाका भाव आया... आलाला..! पुरुषार्थसिद्धि उपाय, अमृतचंद्राचार्य कहते हैं, प्रभु! वह राग तेरी हिंसा है. अरेरे..! गजब! यहां तो लौकिक काम करे. ... कार्यवाहकके लिसाबसे, अग्राणी बनकर काम लेना, वह बडप्पनमें गिननेमें आता है. यहां परमात्मा कहते हैं, परकी दया पाल सकते नहीं. फिर भी परकी दयाका भाव आना, वह तेरे स्वप्नकी हिंसा है, प्रभु! पुरुषार्थसिद्धि उपायमें द्विगंबर संत जगतकी दरकार छोडकर, समाज संतुलित रहेगा या नहीं, एक जूथ रहेगा कि नहीं, दो भाग हो जायेंगे, दरकार नहीं है उनको. मार्ग यह है. सत्को संख्याकी जरूरत नहीं. क्या कहा?

दो, पांच, पच्ची लखर, लाख-दो लाख माने तो वह सत्. ऐसी कोई सत्को संख्याकी जरूरत नहीं है. आलाला..! एक ही निकले सत्को माननेवाला तो भी सत् तो सत् है. आलाला..! असत्यको तो माननेवाली पूरी दुनिया है. परंतु सत्को माननेवालेकी संख्या ज्यादा हो तो वह सत्को माननेवालेकी प्रसिद्धि होगी, ऐसा

है नहीं. आलाला..! सतूको संख्याकी जरूरत नहीं है, सतूको सतूके स्वभावकी जरूरत है. आलाला..! भगवान आत्मा, जैसा-जैसा जितना जैसा है, उतना दृष्टिमें लेकर भेदज्ञान करना, उसकी सतूकी संख्याकी जरूरत नहीं कि बहुत लोग माने तो ठीक कलवाये. आलाला..! कडक लगे, क्या करें?

गांधीजी प्रवचनमें आये थे, राजकोटमें. समयसार चलता था. वहां तो जैसे चले कि परकी दया करना, वह भाव भी हिंसा है. आलाला..! वह सदाचरण नहीं. और उसका.. आलाला..! परकी में दया पावता हूं, सत्य बोलता हूं. अहिंसा करता हूं, चोरी नहीं करता हूं, ब्रह्मचर्य पावता हूं, परिग्रह मैंने छोड़ दिया है, जैसे भावको भी भगवान हिंसा कहते हैं. क्योंकि वह विकल्प उठा है. आलाला..! सुनना कठिन लगे. सत्य वस्तु भगवान को ही अवैकिक बात है. आलाला..!

वहां कहा, 'चैतन्यलोकमेंसे बाहर आना नहीं सुलता.' जिसको चैतन्यलोककी रुचि हो गयी अंदर, भेदज्ञान हुआ, राग चले तो शुभ हो या अशुभ, दोनों ऊपर है. और भगवान अमृतस्वरूप है. ऐसा दोनोंके बीचका भेदज्ञान हो गया, आलाला..! इस लोकमेंसे बाहर आना नहीं चलता. 'ज्ञानकी ऐसी शक्ति है...' ज्ञान अर्थात् आत्मा. भगवान आत्माका ऐसा सामर्थ्य है कि 'जब एक ही समयमें...' एक ही समयमें 'इस निज ऋद्धिको...' आलाला..! अपनी अनंती ऋद्धि, प्रभु! एक समयमें पा सकता है, ऐसी उसमें ताकत है. आलाला..! अपनी अनंत अपूर्व ऋद्धि अनंत कालमें अपूर्व अर्थात् पूर्वमें कभी पायी नहीं. वह ऋद्धि भी विद्यमान सत् तैयार है. एक समयमें पूर्ण ऋद्धि प्राप्त कर सके ऐसी ताकत है. आलाला..! अरे..रे..! वह आत्मा कैसे बैठे? शरीरके सामर्थ्यका बैठे. आलाला..!

एक बार तो ऐसा हुआ कि सब योद्धा एकट्टे हुए. सत्मा (भरी). नेमिनाथ भगवान भी साथमें बैठे थे. भीम, अर्जुन आदि सब योद्धा साथमें थे. सब प्रशंसा करने लगे. किसीने कहा, भीम (बड़ा) योद्धा. शरीरका सामर्थ्य, हां! आत्माका नहीं. किसीने कहा, उसका बल ज्यादा है, कोई भीमका कहे, कोई अर्जुनका कहे, इलानाका कहे. एकने सत्तामें ऐसा कहा, नेमिनाथ भगवान विराजते हैं. गृहस्थाश्रममें थे. उसके शरीरके सामर्थ्यके आगे किसीका सामर्थ्य नहीं है. शरीरका सामर्थ्य. आलाला..! ऐसा हुआ कि भगवान भी बैठे थे. गृहस्थाश्रममें थे. राग-विकल्प आता था. ऐसी बात लुयी तो दो पैर नीचे रखे. इस पैरको उठाओ. कोई बलवान योद्धा इस पैरको उपर करो. श्री कृष्ण आये. पाठ ऐसा है. श्रीकृष्ण पैरको उंचा करते हैं. शरीरका हीतना सामर्थ्य. तीर्थकरके शरीरका. आलाला..! श्रीकृष्ण जैसे लौट गये. वज्रबिंब

भिसके तो पैर भिसके. जैसा तो शरीरका बल था, जडका. जैसा विकल्प आ गया. भगवानको भी जैसा विकल्प आ गया. यह लोग बातें करते हैं, यलो, लले देभ ले. आलाहा..! यह भी दृःभरूप तो लगता था, विकल्प. कमजोरीके कारणसे यह विकल्प आया. श्रीकृष्णने पैरा उठानेकी बहुत महेनत की. अेक तसू (-अेक ईय जितना नाप) भिसका नहीं. परंतु यह तो शरीरके बलकी बात है. यह कोई आत्माके बलकी बात नहीं है. आत्मा अेक परमाणुको भी पलट सकता नहीं. आत्मा, आंभकी पलक जभकती है, यह आत्मासे नहीं. आलाहा..! थोड़ी पलक जभकती है, यह आत्मासे नहीं. तीन कालमें आत्मासे नहीं. आत्मा उसको छूता नहीं, आत्मामें उसका अत्यंत अभाव है, और पलकमें आत्माका अत्यंत अभाव है. अभाव है उसमें छूअे कहांसे? पलक जभकाये कैसे? अंगूली हिलाना.. आलाहा..! आत्माकी ताकत नहीं. अंगूली जैसे हिलाये यह आत्माकी ताकत नहीं. यह आत्मासे हिलती नहीं. यह अंगूली अपने परमाणुके सामर्थ्यसे हिलती है. आलाहा..! यह माननेवाला निकले, जडकी शक्ति. परंतु चैतन्यके बलका पार नहीं, प्रभु! यह तो जड है, यह तो प्रभु आत्मा है. अनंत-अनंत चैतन्यऋद्धि भरी है. अेक ऋद्धिकी भी अमोल किंमत है. आलाहा..! जिसका मूल्य नहीं, जैसा भगवान आत्मा..

यहां कहते हैं, 'जैसी शक्ति है कि जव अेक ही समयमें ईस निज ऋद्धिको तथा अन्य सबको ज्ञान ले.' करे किसिका नहीं. करना किसी भी चीजका अेक परमाणुका नहीं. और ज्ञाननेमें कोई चीज बाकी नहीं. आलाहा..! प्रभु! जैसा मार्ग है. जैसा मार्ग गुप्त हो गया है. अभी तो घमाघम बाहरकी घमाघममें लोग मान बैठते हैं. प्रभु! जवन यवा जाता है. आयुष्य पूरा हो जायेगा? कहां जायेगा प्रभु? तेरी सत्ता तो अनादिअनंत है. उसकी सत्ता भविष्यमें अनंत काल रहनेवाली है. तेरी सत्ता तो अनंत काल रहनेवाली है. प्रभु! कहां रहेगा? तेरेमें जे रुचि, दृष्टि और भेदज्ञान नहीं किया (तो) कहां रहेगा? प्रभु! यहां तो अेक समयमें अनंत ऋद्धि और तीन काल ज्ञाननेकी उसमें शक्ति है. उस शक्तिका भरोसा, विश्वास आता नहीं. आलाहा..! भाई नहीं आये हैं न? बाबुभाई.

'यह अपने क्षेत्रमें निवास करता हुआ...' क्या कहते हैं? परकी ऋद्धि अपने क्षेत्रमें रहकर ज्ञानता है. अपनी ऋद्धि अपनेमें रहकर ज्ञानता है और अपने सिवा सब लोकालोक, त्रिलोकनाथ देवलीका देवज्ञान ऋद्धि भी यह आत्मा ज्ञानता है, अपने क्षेत्रमें रहकर ज्ञानता है. अपने क्षेत्रमें रहकर ज्ञानता है. अपने क्षेत्रको छोडकर ज्ञानता है जैसा नहीं. आलाहा..! जैसी बात कठिन लगे, भाई!

बहिनकी वाणी तो निकल गयी है. आला..! बहिन तो कल नहीं आये थे. बरसात आयी थी. .. आते हैं न, नहीं आये थे. उनकी स्थिति तो अव्यक्त है. परसों है न? जन्मदिन. ६८. स्त्रीका देह आ गया है. उनकी जो शक्ति है, उसका नाप करनेका साधारणका काम नहीं. ऐसी शक्ति है अंदर. अनुभव-अनुभूति सम्यग्दर्शन. असंख्य अरब वर्षोंका जतिस्मरण. असंख्य अरबमें देव आया, इसलिये देवका आयुष्य तो बड़ा आयुष्य है न. स्वर्गका. पहले स्वर्गका दो सागरका आयुष्य है. एक सागरमें दस कोडा कोडी पल्योपम, एक पल्योपमके असंख्यवे भागमें असंख्य अरब वर्ष. क्या कला? एक भव सुधर्म (देवलोकका) लो और ज्ञाननेमें आया. वहां दो सागरकी स्थिति है. एक सागरमें दस कोडा कोडी पल्योपम होता है. दस कोडा कोडी पल्योपम. एक पल्यके असंख्यवे भागमें असंख्य अरब वर्ष जाते हैं. आला..! ऐसा नौ भवका ज्ञान (है). कुछ नहीं. मुट्टेकी भांति भडे रहते हैं. वस्तु तो वस्तु है. लोग स्वीकारे, न स्वीकारे उसके साथ कोई संबंध नहीं है. सत्को संख्याकी जरूरत नहीं है. यह माने और माननेवाले मिले तो मेरा सत् और मेरा माननेवाला नहीं मिले तो मेरा असत् लो जाय. सत् तीन कालमें असत् होता नहीं. और तीन कालमें सत् प्राप्त हुआ वह असत् लो जाता नहीं. दुनिया निंदा करे, विरोध करे, निश्चयात्मासी कहे, याहे जैसे भाषा कहे, वस्तुमें अंश .. नहीं. आला..! ऐसी आत्मामें ताकत है. आला..!

‘ज्ञानकी ऐसी शक्ति है कि जब एक ही समयमें इस निज ऋद्धिको तथा अन्य सबको...’ अपने क्षेत्रमें रहकर ज्ञानता है. ‘वह अपने क्षेत्रमें निवास करता हुआ ज्ञानता है...’ आला..! एक आदमी घरमें जडा लो. (बाहर) ताबूथ या लाणो आदमी निकले लो. घरमें भडे रहकर जैसे देजे, जैसे आत्मामें भडे-भडे पूरी दुनिया ज्ञाने. तीन काल तीन लोकको आत्मा ज्ञाने. आला..! घरमें भडे रहकर ज्ञाने. जैसे प्रभुकी तुजे... आला..! उस ओरकी रुचि, उस ओरकी वृत्ति, उस ओरकी सन्मुखता, उस ओरका जुकाव.. आला..! उसके बिना तो सब निरर्थक है. पूरी विदगी निरर्थक यही जायेगी.

यहां कहते हैं, ‘अपने क्षेत्रमें निवास करता हुआ ज्ञानता है...’ परको ज्ञाननेके लिये पर क्षेत्रमें ज्ञाना पडता नहीं. अलोक. अलोकको ज्ञाने कि अलोक कितना है. चौदह ब्रह्मांड-यह चौदह राजलोक. अनंत अनंत अनंत अनंत.. किसी भी दिशामें चले जाओ, इस ओर आकाश है, (उस दिशामें) जैसे ही चला जाय, कोई पता नहीं, उस ओर चला जाय, तो वहां भी पता नहीं. आला..! ऐसी आकाशकी

श्रेणि धतनेमें असंभ्य है. अक-अक श्रेणि लोकमें यले जाय तो लोक तो पूरा लो गया. बाहर ली श्रेणि गध तो आभिरमें क्या? उसका अंत कहां? आलाला..! क्षेत्रका ली असा स्वभाव. तो क्षेत्रज्ञ-क्षेत्रको जाननेवाला भगवान. आलाला..! उसकी शक्ति क्या कलनी! क्षेत्रका असा स्वभाव, थोडा विचार करे तो मावूम पडे. श्रेणि, शास्त्रमें विभा है. लोक और अवोक दो भाग दिभे. श्रेणि असे ली यली जाती है, दूसरी, तीसरी यली जाती है. अनंत श्रेणि, कहीं अंत नहीं. उपर अंत नहीं, धस ओर अंत नहीं, उस ओर अंत नहीं, नीचे अंत नहीं. आलाला..! असे अवोकको ली अपने क्षेत्रमें रहकर, अवोकमें गये बिना अपने सामर्थ्यसे अपने क्षेत्रमें जानता है. आलाला..! विचार कल किया है? ... अंदर सत् क्या है, असा भगवान आत्मा 'अपने क्षेत्रमें निवास करता हुआ जानता है;...'

'श्रम पडे बिना,...' धतना जाननेमें श्रम पड जाय, थकान लगे, असा है नहीं. आनंदके सागरमें, आनंदके सागरमें आनंदका अनुभव करते हुआ, आनंदके साथका ज्ञान लोकावोकको जान लेता है. आलाला..! 'श्रम पडे बिना, भेद हुआ बिना जानता है.' धतना जाना तो श्रम पडे कि नहीं? जातावली विभता है, अक-दो जातावली ५००-५०० पत्रेकी विभे तो थक जाय. पढते-पढते थक जाय. दिवालीके दिन बडी-बडी जातावली लो, पैसेवाला लो. लमो मकानके पास ... वडोदरामें, लोटिया वारा. बडे गृहस्थ थे. जातावली विभने बैठे तल बडी जातावली निकाले. नूतन वर्षके दिन. पार नहीं, उतना विभते रहे. मानो ज्यादा विभे तो ज्यादा पैसे भिलेंगे. आलाला..! भुदाको नमस्कार, भुदाको नमस्कार, भुदाको असा और भुदाको वैसा. दुकानके पास था. ... नरुदिन नामका बडा वारा, वडोदराका. लोग असा माने कि... यहां बनिये ली विभते हैं न. शाविभद्रकी ऋद्धि लो. कहां डालेगा तू? क्या है तुजे? आलाला..!

मुमुक्षु :- बालुबलीका बल लोओ.

उत्तर :- बालुबलीका बल लोओ. किसके साथ तुजे लडना है, प्रलु? क्या करना है? अलभयकुमारकी बुद्धि लो. आलाला..!

यहां तो कलते हैं, आत्माकी बुद्धि लोओ. जिस बुद्धिमें अंतरमें रहकर तीन काल तीन लोक जाने, फिर ली श्रम नहीं, परंतु आनंद है. अनंत-अनंत आनंद है. आलाला..! भेदज्ञानमें ली आनंद है तो सर्वज्ञमें तो क्या कलना? आला..!

'अंतरमें रहकर सब जान लेता है,...' अंतरमें रहकर सब जान लेता है. करना है कुछ नहीं, कर सके नहीं कुछ, जान सके (सब कुछ), अक ली चीज बाकी

रभे बिना. आलाला..! 'सब ज्ञान बेता है,...' 'अंतरमें रहकर सब ज्ञान बेता है, बाहर अंकने नहीं ज्ञाना पडता.' आलाला..! अलोकको ज्ञानना हो तो उपयोग बाहर नहीं रहता. उपयोग बाहर जाये तो बाहर ज्ञान सके जैसा नहीं. अंतरमें रहा उपयोग परको ज्ञान सकता है. आलाला..! अभी भी जैसा है. गिरनार आदि पर्वत पर चढे. नीचे उतरे तो कितना दिखे. आंख तो धतनी है, परंतु दिखता है कितना? मालूम है, सब देखा है न. चारों ओर नीचे दिखे, दस-दस, पंद्रह-पंद्रह, बीस कोस तक. धतनी छोटी आंखमें नीचे उतरते समय (दिखाई दे). उपर चढते समय तो सामने पर्वत देखता है. लेकिन उतरते समय... यह किया है न, सब देखा है न. उतरते समय देखे तो कहीं की कहीं नजर (पहुंचे). कहां जेतपुर और कहां जूनागढ. वहांसे दिखे. वहां ज्ञाना पडता है? आलाला..! अपनेमें रहकर सबको ज्ञाननेकी धतनी ताकत है. कभी जांच करे तो मालूम पडे न. आलाला..! समेदशीअर पर जाय. फिर नीचे नजर करे तो कितनी बात ज्ञान सकता है. ... परंतु रागी प्राणी है. आलाला..!

यहां तो राग रहित आत्माकी शक्ति भीवी, श्रम पडे बिना, भेद बिना अपने क्षेत्रमें रहकर सब भावको अपने क्षेत्रमें सब भावको ज्ञान बेता है. जैसी ताकत आत्मामें है. आलाला..!

मुमुक्षु :- यह चैतन्यकी ऋद्धि?

समाधान :- चैतन्यकी ऋद्धि. सेठपना नहीं कर सकता. आलाला..! अेक पैसा किसीको दे सकता नहीं. किससे अेक पैसा ले सकता नहीं. अरर..! जैसी चीज. भगवान! तू तो ज्ञानस्वरूप है न, प्रभु! ज्ञानस्वरूपमें क्या है? प्रभु! ज्ञान ज्ञाननेका काम करे? ज्ञान परका काम करे? क्या करता है? आलाला..! धतने-धतने काम किये, धतने काम हमने किया, हमने व्यवस्था की. धस बडी संस्थाके हम व्यवस्थापक हैं. लेकिन आपू! प्रभु! वह वस्तु व्यवस्था तो समय-समयमें होनेवाली होगी ही. वह व्यवस्था होती है और तू व्यवस्था करनेवाला बन जा, कहां ज्ञाना है तुजे? आलाला..! जिसको देखनेसे अभिमान होता है, वहां लोकमें रहडने ज्ञाना है. लोकमें रहडने ज्ञाना है. आलाला..!

यहां कहते हैं, आलाला..! 'बाहर अंकने नहीं ज्ञाना पडता.' 390 हुआ? किसीने धसमें लिखा है. 329.

पर्याय पर दृष्टि रजनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता, द्रव्यदृष्टि करनेसे ही चैतन्य प्रगट होता है. द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य भरा है, उस द्रव्य पर दृष्टि लगाओ. निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोई भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है. साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है. द्रव्यदृष्टि करनेसे ही आगे बढ़ा जा सकता है, शुद्ध पर्यायकी दृष्टिसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता. द्रव्यदृष्टिमें मात्र शुद्ध अण्ड द्रव्यसामान्यका ही स्वीकार होता है. 329.

उ२१. 'पर्याय पर दृष्टि रजनेसे...' है? आलाहा..! पर उपर दृष्टि रजनेसे, उसकी तो बात कहां करनी? 'पर्याय पर दृष्टि रजनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता,...' आलाहा..! भगवान आत्मा पर उपर लक्ष्य करनेसे, श्रवण, मनन, संग, सत्संग, उससे कोई आत्मा प्रगट नहीं होता. उससे तो नहीं होता, परंतु पर्याय पर दृष्टि रजनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता. आलाहा..! ऐसी बात है. अपनी पर्याय. दूसरी चीजकी दृष्टि करनेसे बहिरात्मा (हो) जाता है. बहिर आत्मा-बाह्य चीज मेरी है, मैं परको ज्ञानता हूं, यह चीज मेरी है, यह चीज है तो मैं ज्ञानता हूं, मेरेमें ताकत है तो मैं ज्ञानता हूं, ऐसा नहीं मानता. वह चीज है तो मैं ज्ञानता हूं. ज्ञाननेकी शक्ति ... मेरेमें ज्ञानकी ताकत है. क्षेत्र बटवे बिना (ज्ञानता हूं). आलाहा..! उ२१ है न? आलाहा..!

'द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य भरा है,...' द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य (भरा है). द्रव्य अर्थात् पैसा नहीं. द्रव्य अर्थात् वस्तु. उसकी शक्ति-गुण, और उसकी दशाको अवस्था (कहते हैं). द्रव्य, गुण और पर्याय तीन है. उसकी सत्ता तीनमें है, बाहर कहीं नहीं है. बाहरके साथ कुछ संबंध नहीं. अपनेमें द्रव्य, गुण, पर्याय तीन है. द्रव्य अर्थात् त्रिकावी वस्तु, गुण अर्थात् त्रिकावी शक्ति. पर्याय अर्थात् वर्तमान दशा-अवस्था. आलाहा..! 'पर्याय पर दृष्टि रजनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता,...' आलाहा..! सुननेसे (नहीं होता). कठिन बात है, प्रभु! प्रत्यक्ष दिभता हो, वह बूढ़ी कैसे? क्या दिभता है? प्रभु! आलाहा..!

'पर्याय पर दृष्टि रजनेसे चैतन्य प्रगट नहीं होता, द्रव्यदृष्टि करनेसे ही...' त्रिकावी भगवान पूरुर्निंदका नाथ, अेकूप त्रिकाव. पर्याय तो पलटती है. पर्याय तो अेक समयमें अेक और दूसरे समय दूसरी पलटती है. पलटतीके पीछे अंदर भगवान पातालमें विराजता है. पर्यायकी अपेक्षासे पाताल अंदर. 'द्रव्यदृष्टि करनेसे

ही चैतन्य प्रगट होता है.' आलाला..! द्रव्यदृष्टि करनेसे ही. अंकांत हुआ. दूसरा कोण उपाय नहीं, प्रभु! दूसरी कोण रीत नहीं है, तीन काव तीन लोकमें. तीन लोकके नाथ तीर्थकर, अनंत तीर्थकरों, अनंत सर्वज्ञो, अनंत संतों यह बात करके गये हैं. आलाला..! 'द्रव्यदृष्टि करनेसे ही चैतन्य प्रगट होता है.' तेरी पर्याय पर दृष्टि करनेसे पर्यायमूढ हो जाता है. आलाला..! प्रवचनसार ८३ गाथा. पहलीमें लिया है, पर्यायमूढा परसमया. अपनी पर्यायमें भी दृष्टि रहनेवाला, पर्यायमूढ परसमया-वह परात्मा, अनात्मा है. वह आत्मा नहीं. आलाला..! अरे..! दुनियाके पास ऐसी बात? मार्ग तो ऐसा है. बचाव करनेके लिये कुछ भी कहे, दूसरा होता नहीं.

'द्रव्यमें अनंत सामर्थ्य भरा है, उस द्रव्य पर दृष्टि लगाओ.' आलाला..! भगवान चैतन्यस्वरूप अनंत गुणका भंडार, अनंता.. अनंता.. अनंता.. अनंता.. अनंता.. तीन कावके समयसे भी अनंत.. अनंत. एक सेकंडमें असंख्य समय. जैसे तीन कावका समय, उससे भी अनंतगुना तेरेमें गुण है. आलाला..! तेरेमें उससे भी अनंतगुनी शक्ति है. आलाला..! 'उस द्रव्य पर दृष्टि लगाओ. निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोण भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है.' क्या कहते हैं? सम्यग्दर्शन धर्मकी प्रथम शुरुआत, धर्मकी पहली सीढ़ी, धर्मका प्रथम सोपान, द्रव्यदृष्टि... आलाला..! 'निगोदसे लेकर सिद्ध तक...' बीचमें सब आ गया. पंच परमेष्ठी आदि. 'निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोण भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है.' आलाला..! सम्यग्दर्शनका, निगोदसे लेकर सिद्ध भगवान तक, बीचमें पंच परमेष्ठी, अरिहंत आदि बीचमें आ गये. आलाला..! 'निगोदसे लेकर सिद्ध तककी कोण भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है.' आलाला..! सम्यग्दर्शनका विषय कोण (पर्याय) नहीं है. निगोदसे लेकर सिद्ध सम्यग्दर्शनका विषय-ध्येय नहीं है. आलाला..! अरे..रे..! ऐसा सुनना...

यह तो भगवानकी वाणी है. अनुभवमेंसे ... भगवानके पास सुना था. ज्ञातिस्मरण है. असंख्य अरबों सालका, बलिनको. जगतको बैठना कठिन पडे. अपनी लोशियारीके आगे ... चीज क्या है, उसका नाप करना कठिन पडे.

यहां कहते हैं, यह बलिनके शब्द है. 'कोण भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है. साधकदशा भी...' आलाला..! अरे..! साधकदशा. सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्षमार्ग भी 'शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है.' आलाला..! कठिन पडे, पाटनीज! ऐसी बात है. 'साधकदशा भी...' मोक्षमार्ग प्रगट हुआ तो भी 'शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है.' आलाला..! सम्यग्दर्शनका विषय वह भी नहीं है. सम्यग्दर्शनका सम्यग्ज्ञान भी विषय नहीं है. सम्यग्दर्शनका चारित्रदशा

वह भी विषय नहीं। वह तो नहीं, अपितु पंच परमेष्ठी और सिद्ध भी उसका विषय नहीं है। आह्लाहा..! अपनी पर्याय भी चार ज्ञान प्रगट हुआ हो, तो भी वह दृष्टिका विषय नहीं है। आह्लाहा..! बड़ी कठिन बात। 'कोई भी पर्याय शुद्ध दृष्टिका विषय नहीं है। साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है।' शुद्ध दृष्टिका विषय तो त्रिकाव स्वभाव है, साधकदशा तो पर्याय है। पर्याय तो उसमें है नहीं। आह्लाहा..! गजब बात है! ऐसी बात बाहर आये तो सुननेमें.. पुण्य है तो बाहर यह बात सुनते हैं, नहीं तो मुश्किल हो जाय। आह्लाहा..!

'साधकदशा भी...' मोक्षका मार्ग-निश्चय मोक्षमार्ग। सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र। क्षायिक समकित, क्षायिक समकित भी समकितका विषय नहीं है। आह्लाहा..! ऐसा है, भगवान! तेरी दृष्टिका विषय तो अलौकिक ... है। आह्लाहा..! पूर्णानंदका नाथ, उसमें विपरीतता तो नहीं, अल्पता नहीं और पूर्णतासे पूर्ण भरा भगवान (है)। अनंत गुण, 'साधकदशा भी शुद्ध दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है।' मूल स्वभावमें साधकदशा नहीं है। आह्लाहा..! दृष्टि, दृष्टिके विषयभूत मूल स्वभावमें नहीं है। (मूल स्वभाव है), उसमें दृष्टि नहीं है, ऐसा कहते हैं। साधकदशाका विषय है, परंतु साधकदशा उसमें नहीं है। आह्लाहा..! ऐसी बात है। सुनने तो मिले।

'द्रव्यदृष्टि करनेसे ही आगे बढ़ा जा सकता है,...' सब उपरसे दृष्टि उठाकर, पर्याय परसे दृष्टि उठाकर.. आह्लाहा..! अपने द्रव्य पर दृष्टि देनेसे आगे बढ़ सकता है। चारित्र, केवलज्ञान ले सकता है। 'शुद्ध पर्यायकी दृष्टिसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।' क्या कहते हैं? शुद्ध पर्याय चार ज्ञान प्रगट हुआ, अवधिज्ञान प्रगट हुआ। उससे भी, 'शुद्ध पर्यायकी दृष्टिसे भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।' आगे बढ़नेमें तो दृष्टिका विषय है उसे पकड़नेसे आगे बढ़ सकता है। उत्पन्न भी उससे होता है और उसीके आश्रयसे आगे बढ़ सकता है। पर्याय जो निर्मल हुयी, उसके आश्रयसे बढ़ नहीं सकता। आह्लाहा..!

'द्रव्यदृष्टिमें मात्र शुद्ध अर्जुन द्रव्यसामान्यका ही स्वीकार होता है।' आह्लाहा..! (समय हो गया)। (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)